यादों की बोझ

कंधों पर उसकी बेजान जिस्म का बोझ;
आँसू मेरी आँखों से नहीं;
रूह से बहने लगा।
इश्क ने कुछ यूँ सिखाया,
खोकर भी तुझे चाहना पड़ता है।

कुछ प्रेम ऐसा होता है,
जो पूरा होकर भी अधूरा रह जाता है।
सब दिन चाँद तेरी जिक्र करती थी,
वे दिन रात कुछ ज्यादा ही रोशन होते;
पर आज आसमान में चाँद ही नहीं थी।

हम एक साथ अपने भविष्य के सपने देखे
पर कुछ सपने आँखों में ही मर जाते हैं।
अंधेरे से लड़ते-लड़ते,
तुम खुद ही रोशनी बन गया।

अब तुम इतनी पास होकर भी दूर हैं,
और मैं दूर होकर भी सिर्फ तेरा हूँ।

कुछ पल ऐसा होती है,
जब खामोशियाँ शब्दों से भारी होती हैं।
अब तुम मेरे साथ नहीं,
फिर भी मेरी सारी दुआ तुझसे शुरू होती है।
मेरी कंधें उसकी शरीर;
और पादों से सुन्न हो जाया।

अब मैं भीड़ में भी अकेला हूँ,
शायद मैं खुद से ही बिछड़ जाया हूँ।
रातें लंबी नहीं होती,
बस पादें सोने नहीं देती हैं।
दिन-रात मेरी मन
तुम्हारी पादों से भरी रहती है।

धीरे-धीरे तुझे मेरी कंधों से उतारा,
तुम्हारी बेजान जिस्म;
मिट्टी से मिल जाया।

अब मेरी कंधें भारी नहीं थे
पर मेरी दिल थी।